**Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences** ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.831
Volume - 7, Issue - 04 April - 2024

DOIs:10.2018/SS/202404009 --:-- Research Paper / Article / Review

# ऑनलाइन शिक्षण के प्रति ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन

**[1] डॉ. शिव स्वरूप शर्मा, [2] अनुज कुमार शर्मा**
[1]'विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा विभाग, खण्डेलवाल कॉलेज ऑफ मैनेजमेण्ट साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश
[2]' सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय, शिवनगर, बरेली उत्तर प्रदेश

Email - shivss164@gmail.com

सारांश: वर्तमान समय में हर क्षेत्र में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी सेवाओं का काफी विस्तार हुआ है। शिक्षा क्षेत्र भी इसका अपवाद नहीं है। ऑन-लाइन शिक्षा से तात्पर्य अपने स्थान पर ही इण्टरनेट व अन्य संचार उपकरणों की सहायता से प्राप्त की जाने वाली शिक्षा से है। प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्श के रूप में 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया एवं स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया।

मूलशब्दः सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, ऑन-लाइन शिक्षा, इण्टरनेट।

## 1. प्रस्तावना:

प्राचीन गुरूकुल तथा आश्रम की वाचिक परम्परा से होते हुए शिक्षा ने अनेक सोपान तय किये है। पिछली सदी के कामोबेश परम्पारिक, श्याम पट्ट तथा खड़िया, मिट्टी (चॉक) के दौर से गुजरते हुए इक्कीसवीं सदी के इस दूसरे दशक में पठन-पाठन का समूचा परिदृश्य बहुत बदल चुका है। आज की स्कूली शिक्षा नवयुगीन साधनों तथा युक्तियों से सुसज्जित होती जा रही है। साधारण ब्लैकबोर्ड की जगह स्मार्टबोर्ड ने ले ली है तथा विविध प्रकार के मार्कर पेन ने खड़िया मिट्टी (चॉक) का स्थान ले लिया है। इंगित करने के लिये इस्तेमाल होने वाली स्टिक का स्थान लेजर पॉइंटर ने ले लिया है। स्लाइड प्रोजेक्टर तथा एल0सी0डी0 प्रोजेक्टर अब हर कक्षा की अनिवार्य आवश्यकता बनते जा रहे हैं।

वर्तमान युग में ऑन लाइन शिक्षा का प्रचलन तेजी से बढ़ता जा रहा है क्योंकि आज इण्टरनेट सर्च इन्जन पर शिक्षा सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारियाँ उपलब्ध हैं चाहे वह किसी भी क्षेत्र से सम्बन्धित क्यों न हो। विद्यार्थी अपने शिक्षा सम्बन्धी समस्त प्रदत्त कार्य को पूर्ण करने हेतु ऑन लाइन सर्च इन्जन गूगल पर जाकर ही सम्बन्धित सामग्री सहजता से प्राप्त कर लेता है। गुणात्ता युक्त सन्दर्भित पुस्तकें एवं जर्नल भी ऑन लाइन अध्ययन हेतु विद्यार्थियों को सहज उपलब्ध हो जाते है। विषय सम्बन्धी रोचक सूचनाएँ विविध रूपों में सर्व सुलभ है। आज अधिकांश विद्यार्थी चाहे वह ग्रामीण क्षेत्रों से हो या शहरी क्षेत्रों से अध्ययन हेतु इण्टरनेट के सुलभ साधन मानते है क्योंकि वह परम्परागत पढ़ाई के साथ-साथ ज्ञान एवं जिज्ञासा पूर्ति हेतु रूचिकर दृश्य श्रव्य सामग्री के माध्यम से अध्ययन करना चाहते है, जो उन्हें विडियो के रूप में प्राप्त हो जाता है। यूट्यूब चैनल, ट्विटर, फेसबुक इसके लोकप्रिय माध्यम बन चुके है।

## 2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

भारतीय शिक्षा का इतिहास अति प्राचीन है। वैदिक काल से लेकर आज तक भारतीय शिक्षा निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रही है। समय के साथ परिवर्तित हो रही सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन एवं संशोधन किये जा रहे है।

तकनीकी का प्रयोग बढ़ने के साथ शिक्षा का स्वरूप भी बदला है। आज की बदलती परिस्थितियों एवं नवोन्मेष ने शिक्षा का स्वरूप भी अधिनूतन कर दिया है। यदि यह कहा जाए तो व्यर्थ नहीं होगा कि वर्तमान पीढ़ी की शिक्षा का अधिकांश हिस्सा वेब बेस्ट तकनीकी पर निर्भर होता जा रहा है। ऐसे हालातों में शिक्षा की दशा और दिशा संभालने वाले शिक्षाविद्, अध्यापकों, विद्यार्थियों, शोधार्थियों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह उन कारकों का अध्ययन करे जो शिक्षा को सीधे-सीधे प्रभावित करते हैं। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षा के समस्त घटक, विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक एवं समाज के हित धारकों के साथ नीति निर्माता भी ई-शिक्षा के प्रति सजग है और निरन्तर होते नवोन्मेषों का अपनाने हेतु तत्पर है।

ई-पोर्टल एवं विभिन्न शैक्षिक वेब साइट्स पर विविध सामग्री उपलब्ध हैं लेकिन आवश्यकता यह है कि विद्यार्थियों का मस्तिष्क प्रशिक्षित किया जाये, जिससे कि वह स्वतः उपयुक्त विषय सामग्री का चयन करने में समर्थ हो।

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक समर्थित शिक्षण अधिगम के रूप में परिभाषित किया जाता है जो स्वाभाविक तौर पर क्रियात्मक होते हैं और जिनका उद्देश्य शिक्षार्थी के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान के सन्दर्भ में ज्ञान के निर्माण को प्रभावित करना है। सूचना और संचार प्रणालियाँ, चाहे इनमें नेटवर्क की व्यवस्था हो या न हो, शिक्षा प्रक्रिया को कार्यान्वित करने वाले विशेष माध्यम के रूप में अपनी सेवा प्रदान करती है।

ऑनलाइन शिक्षा या डिजिटल शिक्षा अनिवार्य रूप से कौशल एवं ज्ञान का कम्प्यूटर एवं नेटवर्क समर्थित अंतरण है। ऑनलाइन शिक्षा इलेक्ट्रॉनिक अनुप्रयोगों और सीखने की प्रक्रियाओं के उपयोग को सन्दर्भित करता है। ऑनलाइन के अनुप्रयोगों और प्रक्रियाओं में वेब-आधारित शिक्षा, कम्प्यूटर आधारित शिक्षा, आभासी कक्षाएँ और डिजिटल सहयोग शामिल है। पाठ्य सामग्रियों का वितरण इण्टरनेट, इंट्रानेट/एक्स्ट्रानेट, ऑडियो या वीडियो टेप, उपग्रह टीवी और सीडी रॉम के माध्यम से किया जाता है। इसे स्वयं शिक्षार्थी द्वारा या अनुदेशक के नेतृत्व में किया जा सकता है और इसका माध्यम पाठ, छवि, एनीमेशन, स्ट्रीमिंग वीडियो और ऑडियो है।

3. समस्या कथन :

ऑनलाइन शिक्षण के प्रति ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन।

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

ऑन लाइन शिक्षाः ऑन लाइन शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जो कम्प्यूटर में इण्टरनेट के द्वारा प्रदान की जाती है।

विद्यार्थीः विद्यार्थी से तात्पर्य उस बालक-बालिका से है जो विद्यालय में जाकर शिक्षा ग्रहण करती है।

ऑन शिक्षण के प्रति अभिरूचिः ऑन लाइन शिक्षा की अभिरूचि से तात्पर्य ऑन लाइन शिक्षण में सकारात्मक एवं नकारात्मक रूचि का होना है।

4. अध्ययन के उद्देश्य :

- ऑन लाइन शिक्षण के प्रति ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ऑन लाइन शिक्षण के प्रति छात्र एवं छात्राओं की अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. अध्ययन की परिकल्पनायें :

- ऑन लाइन शिक्षण के प्रति ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ऑन लाइन शिक्षण के प्रति छात्र एवं छात्राओं की अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6. अध्ययन का सीमांकन :

- न्यादर्श के अर्न्तगत केवल बरेली जिला के शिक्षण संस्थानों को ही सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित है।

7. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण :

सिंह एवं राय (मार्च 2017) में माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं पर विज्ञान के प्रति रूचि का शोधकार्य किया। निष्कर्ष स्वरूप यह पाया कि लिंग के आधार पर छात्र-छात्राओं में विज्ञान के प्रति कोई अन्तर नही पाया।

पुष्मिता (2014) ने अपने शोध अध्ययन महाविद्यालयों में कार्यरत् प्रवक्ताओं की भाषा के प्रति अभिरूचि में पाया कि उच्चतम भाषा में दिखाई देने वाली रूचि पर अधिक उच्च उपलब्धि एवं निम्न उपलब्धि प्राप्त प्रवक्ताओं में विभेद करने की क्षमता रखते है।

8. अध्ययन की विधि :

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में बरेली जनपद के समस्त विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा बरेली जनपद के माध्यमिक स्तर के 120 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि से चयन किया गया।

अध्ययन का उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

सांख्यिकीय प्रविधि हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मान का प्रयोग किया गया है।

9. निष्कर्ष :

- प्रथम परिकल्पना में ऑन लाइन शिक्षण के प्रति ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परिकल्पना के परीक्षण के आधार पर यह निष्कर्ष प्रतिपादित किया जा सकता है कि शहरी विद्याथिर्यों का मध्यमान ग्रामीण विद्याथिर्यों के मध्यमान से अधिक है।
- द्वितीय परिकल्पना में ऑन लाइन शिक्षण के प्रति छात्र एवं छात्राओं की अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परिकल्पना के परीक्षण के आधार पर यह निष्कर्ष प्रतिपादित किया जा सकता है कि छात्रों का मध्यमान तथा मानक विचलन छात्राओं के मध्यमान व मानक विचलन से कम है।

10. शैक्षिक निहितार्थ :

जब इण्टरनेट का आविष्कार 42 वर्ष पूर्व लियोनार्ड क्लीनरॉक ने किया तब शायद ही यह उम्मीद की होगी कि यह विश्व का सर्वश्रेष्ठ सूचना तन्त्र बन जायेगा। ई-मेल, चैटिंग,. शॉपिंग, पढ़ाई, लिखाई पत्रकारिता मुकदमें नीलामी से लेकर जनमत संग्रह व शिकायतें भी ऑन लाइन हो गई है।

आज इण्टरनेट "बहुजन हिताय व बहुजन सुखाय" का साधन बन गया है।

प्रस्तुत शोध निष्कर्षों के परिप्रेक्ष्य में अभी भी विद्यार्थियों द्वारा इण्टरनेट के प्रयोग करने वालो की संख्या में वृद्धि की आवश्यकता है।

इस प्रकार पता चलता है कि रिसर्च में इण्टरनेट के अनेक फायदे है। यदि वास्तव में एक शब्द या वाक्य में इसके फायदों का उल्लेख किया जाये तो कहा जा सकता है इण्टरनेट रिसर्च के लिए उसी प्रकार है जैसेः "गागर में सागर भरना" अर्थात् इण्टरनेट सूचनाओं का एक गहरा सागर है जिसमें कि बहुत छोटे रूप में ही सूचनाओं का संकलन किया गया है।

11. सुझाव :

- प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में अध्ययन क्षेत्र में रामपुर जनपद के विद्यालयों को ही लिया गया है। भविष्य में अध्ययन की ओर विस्तृत रूप देकर सभी नगर क्षेत्र व ब्लॉकों के प्राथमिक विद्यालयों पर सम्पादित किया जा सकता है।
- प्रस्तुत लघु शोध में मात्र 6 विद्यालयों का न्यादर्श के रूप में चयन कर अध्ययन किया गया है। भविष्य में इसे और बड़े न्यादर्श पर सम्पादित कर प्रभावी व उचित परिणाम प्राप्त किये जा सकते है।
- प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में अध्ययन केवल माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों पर किया गया है। भविष्य में इसे अध्यापकों-अध्यापिकाओं पर सम्पादित किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. वेस्ट, जे0डब्ल्यू0 (1963) रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली, प्रिन्टिस हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड।
2. हॉन, हस्ले एवं रिक स्टॉक (1994) दि इण्टरनेट कम्प्लीट रिफ्रेन्स, कैलिफोर्निया, मेक्ग्रहिल पब्लिकेशन्स।
3. हॉन, एच0 (1997) इण्टरनेट कम्प्लीट रिफ्रेन्स, नई दिल्ली, टाटा मैग्राहिल पब्लिकेशन्स, कम्पनी, लिमिटेड।
4. सरीन, शशिकला एवं सरीन, अंजलि (199़9) शैक्षिक अनुसन्धान विधियाँ, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. दीवान पी0 एवं शर्मा एरन (2001) आई0टी0 इन इन्साइक्लोपीडिया डॉट कॉम, ई0-कॉमर्स, नई दिल्ली, पेन्टागन प्रेस।
6. धीमान, के0सी0 (2003) कम्प्यूटर साईंस, नगीन प्रकाशन, मेरठ।
7. शर्मा, आर0ए0 (2003) शिक्षा अनुसन्धान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
8. भारद्वाज, सौरभ (2004) कम्प्यूटर अध्ययन, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
9. श्रीवास्तव, डी0एन0 (2007) अनुसन्धान विधियाँ, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
10. सक्सेना, एन0आर0 स्वरूप एवं चतुर्वेदी शिखा (2007) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
11. गुप्ता, एस0पी0 (2008) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।